श्री सत्यनारायण व्रत कथा

Shri Satyanarayan Vrat Katha

Source: Internet Archive — 1899 Atha Satya Narayana Katha Bhasha Tika, Gurukul Kangri scan (complete katha on PDF pages 33–107). Also compared: CC0 1.0 Universal — rights statement attached to the controlling scan; Sanskrit Documents — five-chapter comparison text (research comparison only; not copied).

Valkala's own retelling of the katha in the Skanda Purana, Reva Khanda tradition as printed in the 1899 edition, not a transcription of the original text.

प्रथम अध्याय — नारद को व्रत का उपदेश

KATHA 1

नैमिषारण्य में शौनक आदि ऋषियों ने सूतजी से पूछा कि मनुष्य अपनी इच्छित भलाई किस व्रत या तप से पा सकता है। सूतजी ने वह संवाद सुनाया जिसमें नारद मुनि लोकों में घूमते हुए मनुष्यों को अनेक प्रकार के दुःख और अभाव में देखते हैं। सबके कल्याण का सरल उपाय जानने के लिए वे विष्णुलोक पहुँचते हैं और भगवान नारायण की स्तुति करके अपना प्रश्न रखते हैं। भगवान कहते हैं कि श्रद्धा से किया जाने वाला सत्यनारायण-व्रत दुःख और मोह से निकलने का एक भक्तिमय साधन है। नारद उसके फल, समय और विधि के विषय में विस्तार से पूछते हैं। उत्तर में भगवान संध्या के समय परिवार और बन्धुओं के साथ पूजा, कथा-श्रवण, यथाशक्ति नैवेद्य, दक्षिणा, भोजन और प्रसाद ग्रहण करने का क्रम बताते हैं। मुद्रित पाठ केले, घी, दूध, गेहूँ के आटे और शक्कर या गुड़ से बने सवा भाग नैवेद्य का उल्लेख करता है; यहाँ यह स्रोत का वर्णन है, हर परिवार के लिए अनिवार्य नियम नहीं। अध्याय अंत में कहता है कि श्रद्धा से यह व्रत करने वाले की इच्छा पूरी होती है—यह कथा का पारम्परिक फल-वचन है, कोई निश्चित परिणाम की गारंटी नहीं।

At Naimisharanya, Shaunaka and the other sages ask Suta which observance or discipline may bring people the good they seek. Suta recounts how Narada, while travelling through the worlds, saw people living with many kinds of suffering and deprivation. Wanting a simple means for their welfare, he went to Vishnu's realm, praised Lord Narayana and asked his question. The Lord described the Satyanarayan vrata as a devotional practice undertaken with faith, and Narada asked about its timing, method and traditional fruit. The reply outlines evening worship with family and friends, hearing the story, making an offering according to one's means, giving dakshina, sharing food and receiving prasad. The print names banana, ghee, milk, wheat flour and sugar or jaggery in a one-and-a-quarter measure; that is a feature of this source, not a compulsory rule for every family. The chapter closes with a promise that sincere observance fulfils wishes. This page presents that as the story's devotional claim, not a guaranteed outcome.

द्वितीय अध्याय — ब्राह्मण और लकड़हारे की कथा

KATHA 2

काशी में शतानन्द नाम का एक अत्यन्त निर्धन ब्राह्मण भिक्षा के लिए भटकता था। भगवान उसके सामने वृद्ध ब्राह्मण का रूप लेकर आए, दुःख का कारण पूछा और सत्यनारायण-व्रत करने को कहा। विधि बताकर वृद्ध अदृश्य हो गए। शतानन्द ने अगले दिन मिलने वाली भिक्षा से व्रत करने का संकल्प किया। उस दिन उसे पर्याप्त सामग्री मिली; उसने परिवार और परिचितों के साथ पूजा की और आगे भी प्रत्येक मास यह व्रत करता रहा। कथा उसकी दरिद्रता दूर होने और अंत में मुक्ति पाने को व्रत का फल बताती है। एक दिन उसके घर पूजा के समय लकड़ी बेचने वाला आया। उसने पूजा का कारण पूछा, प्रसाद और जल ग्रहण किया और निश्चय किया कि अगले दिन लकड़ी बेचकर मिले धन से वह भी व्रत करेगा। कथा के अनुसार उस दिन उसे लकड़ी का दुगुना मूल्य मिला। उसने केले, घी, दूध, आटा और शक्कर लेकर अपने बन्धुओं के साथ पूजा की। अध्याय उसके परिवार और आजीविका में समृद्धि आने तथा अंत में सत्यलोक पहुँचने के पारम्परिक फल-वचन पर समाप्त होता है। यह प्रसंग साधन की महँगी भव्यता नहीं, सुनी हुई बात को श्रद्धा और अपनी सामर्थ्य के अनुसार अपनाने पर बल देता है।

In Kashi, a very poor Brahmin named Shatananda wandered in search of alms. The Lord appeared as an elderly Brahmin, asked about his distress and taught him the Satyanarayan vrata before disappearing. Shatananda resolved to perform it with whatever alms he received the next day. He obtained enough to do so, worshipped with family and acquaintances, and continued the observance each month. The story attributes the end of his poverty and his eventual liberation to the vrata. During one such worship, a seller of firewood arrived, asked what was happening, received water and prasad, and resolved to use the next day's earnings for the same observance. The narrative says he received twice the usual price for his wood. He bought banana, ghee, milk, flour and sugar and worshipped with his relatives. The chapter closes with traditional claims of prosperity and an eventual journey to Satyaloka. Its practical emphasis is not expensive display but acting with faith and within one's means.

तृतीय अध्याय — साधु वणिक का भूला हुआ संकल्प

KATHA 3

उल्कामुख नामक राजा अपनी पत्नी के साथ भद्रशीला नदी के तट पर सत्यनारायण-व्रत कर रहे थे। व्यापार के लिए आया साधु नामक वणिक पूजा देखकर पूछता है और सन्तान मिलने पर यही व्रत करने का संकल्प लेता है। उसकी पत्नी लीलावती से कलावती नाम की पुत्री जन्म लेती है, पर वणिक व्रत को पहले पुत्री के विवाह तक टालता है और विवाह के बाद भी भूल जाता है। कुछ समय बाद वह जामाता के साथ रत्नसारपुर में व्यापार करता है। उसी नगर में चन्द्रकेतु राजा का धन चुराने वाला चोर पीछा होते देखकर चोरी का माल उनके पास छोड़ देता है। दोनों निर्दोष होते हुए भी चोर समझे जाते हैं, कारागार में डाल दिए जाते हैं और उनका धन जब्त हो जाता है। घर में भी चोरी हो जाती है; लीलावती और कलावती अन्न के लिए भटकने लगती हैं। एक दिन कलावती एक ब्राह्मण के घर सत्यनारायण-व्रत देखती है, कथा सुनती है और प्रसाद लेकर घर आती है। उसकी बात सुनकर लीलावती परिवार के साथ व्रत करती है और पति तथा जामाता की वापसी की प्रार्थना करती है। कथा कहती है कि भगवान चन्द्रकेतु को स्वप्न में दोनों को छोड़ने और लिया हुआ धन लौटाने का आदेश देते हैं। राजा सुबह उनकी बात सुनता है, उन्हें सम्मान सहित मुक्त करता है और जब्त धन दुगुना लौटाता है। यह अध्याय संकल्प को बार-बार टालने के परिणाम और भूल स्वीकार कर फिर से आरम्भ करने की सम्भावना दोनों को साथ रखता है।

King Ulkamukha and his wife were observing the Satyanarayan vrata on the bank of the Bhadrashila river. A merchant named Sadhu, there on business, saw the worship and vowed to perform it if he received a child. His wife Lilavati gave birth to a daughter, Kalavati, but he postponed the vow until her wedding and then forgot it again. Later he traded in Ratnasarpur with his son-in-law. A thief fleeing the guards left the king's stolen treasure near them, so the innocent pair were taken for thieves, imprisoned and stripped of their wealth. Their home was also robbed, leaving Lilavati and Kalavati searching for food. One day Kalavati saw the vrata at a Brahmin's home, heard the story and returned with prasad. Lilavati then observed the vrata with her family and prayed for the two men to return. The narrative says the Lord appeared to King Chandraketu in a dream and ordered him to release them and restore their property. After hearing them, the king freed them with honour and returned twice the confiscated wealth. The chapter holds together both the cost of repeatedly postponing a vow and the possibility of acknowledging a failure and beginning again.

चतुर्थ अध्याय — असत्य, प्रसाद और पुनर्मिलन

KATHA 4

मुक्त होकर वणिक और उसका जामाता जहाज से घर लौटने लगे। मार्ग में भगवान दण्डी का रूप धरकर पूछते हैं कि नाव में क्या है। वणिक हँसी में कह देता है कि केवल लता-पत्ते हैं। दण्डी कहते हैं—तुम्हारा वचन सत्य हो—और कुछ दूर चले जाते हैं। जहाज का मूल्यवान माल सचमुच लता-पत्तों जैसा देखकर वणिक मूर्छित हो जाता है। जामाता समझाता है कि दण्डी से क्षमा माँगनी चाहिए। वणिक अपनी भूल स्वीकार करता है, पूजा का वचन देता है और शरण माँगता है; कथा के अनुसार माल फिर पूर्ववत हो जाता है। नगर के पास पहुँचकर वह दूत भेजता है। लीलावती पूजा पूरी करके बेटी से साथ चलने को कहती है, पर कलावती पति से मिलने की उतावली में प्रसाद लिए बिना निकल जाती है। तभी उसका पति और नाव दिखाई देना बन्द हो जाते हैं। परिवार शोक में डूबता है और वणिक फिर सत्यदेव की पूजा का संकल्प करता है। आकाशवाणी कलावती की छोड़ी हुई प्रसाद-सेवा को कारण बताती है। वह घर लौटकर प्रसाद ग्रहण करती है और वापस आने पर पति तथा नाव को फिर देखती है। सब लोग विधिपूर्वक पूजा करके घर लौटते हैं; मुद्रित कथा आगे वणिक के पूर्णिमा और संक्रान्ति पर पूजा करते रहने का उल्लेख करती है। अध्याय असत्य बोलने, पूजा को केवल लेन-देन समझने और प्रसाद को तुच्छ मानने के विरुद्ध एक कथा-सन्देश देता है; चमत्कारी घटनाएँ उसी भक्तिपरक कथा का भाग हैं।

After their release, the merchant and his son-in-law sailed home. On the way, the Lord appeared as a mendicant and asked what the boat carried. Laughing, the merchant replied that it held only vines and leaves. The mendicant answered, 'May your words be true,' and walked away. When the valuable cargo appeared to have become foliage, the merchant fainted. His son-in-law urged him to seek forgiveness. The merchant admitted the lie, promised worship and asked for refuge; the story says the cargo was restored. Near home he sent a messenger ahead. Lilavati completed worship and asked her daughter to come, but Kalavati rushed to meet her husband without receiving prasad. Her husband and the boat then disappeared from sight. As the family grieved, the merchant again resolved to worship Satyadev. A heavenly voice identified Kalavati's neglected prasad as the cause. She returned, received it, and on coming back saw her husband and the boat again. The family worshipped and went home; the print says the merchant continued worship on Purnima and Sankranti. The chapter's story-level lesson concerns truthfulness, worship that is more than a transaction, and respect for shared prasad; its miracles remain part of the devotional narrative.

पञ्चम अध्याय — तुङ्गध्वज और समापन फल-वचन

KATHA 5

तुङ्गध्वज नामक राजा एक दिन शिकार से लौटते हुए वट-वृक्ष के नीचे गोपों को परिवार सहित सत्यनारायण की पूजा करते देखता है। गर्व के कारण वह न प्रणाम करता है, न उनके पास बैठता है। गोप उसके लिए प्रसाद रख देते हैं, पर राजा उसे ग्रहण किए बिना चला जाता है। कथा कहती है कि इसके बाद उसके सौ पुत्र, धन और धान्य नष्ट हो जाते हैं। राजा विचार करके अपनी भूल पहचानता है और उसी स्थान पर लौटता है। इस बार वह गोपों के साथ श्रद्धा से पूजा करता और प्रसाद स्वीकार करता है; कथा उसके परिवार और सम्पत्ति लौट आने को सत्यदेव की कृपा बताती है। इसके बाद सूतजी व्रत सुनने और करने के पारम्परिक फलों का वर्णन करते हैं—धन, भय या बन्धन से मुक्ति और अंत में सत्यलोक—जिन्हें यहाँ स्रोत के फल-वचन के रूप में पढ़ना चाहिए, न कि सिद्ध परिणाम के रूप में। अंतिम पद पुराने पात्रों को बाद के जन्मों से जोड़ते हैं: शतानन्द को सुदामा, लकड़ी ढोने वाले को गुहराज, उल्कामुख को दशरथ, साधु वणिक को मोरध्वज, तुङ्गध्वज को स्वायम्भुव और गोपों को व्रजवासी कहा गया है। ये पहचानें कथा की अपनी धार्मिक परम्परा हैं, ऐतिहासिक दावे नहीं। अध्याय का स्थायी मानवीय संकेत यह है कि सामाजिक पद से बड़ा विनय है, और प्रसाद तथा सामूहिक पूजा में किसी को छोटा समझना कथा की दृष्टि में अहंकार है।

Returning from a hunt, King Tungadhwaja saw cowherds worshipping Satyanarayan with their families beneath a banyan tree. Out of pride, he neither bowed nor sat with them. They set aside prasad for him, but he left without receiving it. The story says he then lost his hundred sons, wealth and grain. Reflecting on events, he recognized his mistake and returned. This time he worshipped with the cowherds and accepted prasad; the narrative attributes the restoration of his family and property to Satyadev's grace. Suta then recites the traditional fruits of hearing and performing the vrata—wealth, release from fear or confinement, and finally Satyaloka. They are the source's promises, not assured results. Closing verses connect earlier characters with later births: Shatananda with Sudama, the wood carrier with King Guha, Ulkamukha with Dasharatha, the merchant Sadhu with Moradhwaja, Tungadhwaja with Svayambhuva, and the cowherds with residents of Vraja. These identifications belong to the story's religious tradition rather than historical proof. The chapter's durable human theme is humility: rank does not justify looking down on other worshippers or their shared prasad.